द्रष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): सोनल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address): ____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2, 31/07/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	2	2	1	4	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Sonal

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 124½

टिप्पणी (Remarks): सामान्यतः उत्तर अच्छे हैं। उत्तर लेखन का अभ्यास करते रहें। पूरा प्रश्नपत्र ठीक से हल करने का प्रयत्न किया करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: $10 \times 5 = 50$

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

उपरोक्त पंक्तियाँ 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' नामक शीर्षक के खंड से ली गई है।

'विरह को अंग' में जो साखियाँ कबीर ने लिखी हैं, उनकी मूल संवेदना है ईश्वर अथवा परमतत्व के विरह की वेदना, को दर्शाना।

डॉ श्याम सुंदर दास द्वारा संपादित यह कबीर ग्रंथावली के तीसरे खंड से ली गई साखी है। कबीर ने प्राय: अपने ईश्वर को अपने 'बालम', 'यार' इत्यादि नामों से संबोधित किया है। इन पंक्तियों में वे रात्रि होने पर दीपक में तेल भर कर उसी तरह अपनी प्रियतम (बहुरिया) के आने का इंतजार कर रहे हैं।

3/10

बेहतर करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

उपरोक्त पंक्तियाँ सूरदास कृत भ्रमरगीत सार से ली गई हैं।

गोपियाँ उद्धव को अपने भक्ति मार्ग के पक्ष में तर्क देती हैं। इन पंक्तियों के द्वारा उपालम्भ काव्य का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत होता है। इन पंक्तियों की भाषा ब्रज भाषा है।

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"A3"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परवत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिऐ जरै जो अस पिय लागि।।

उपरोक्त पंक्तियाँ जायसी कृत पद्मावत के नागमती-वियोग खंड से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में नागमती के विरह को दर्शाया गया है। जब रत्नसेन पद्मावती से विवाह करने सिंहल द्वीप की यात्रा के लिए चला जाता है, तब नागमती प्रवास-विरह की स्थिति में होती है। ज्येष्ठ माह के गर्मी से चारों ओर गर्म हवाएँ चल रही हैं। बवंडर उठ रहे हैं तथा पर्वत भी तप रहे हैं। ऐसे ही नागमती के तन-बदन में भी मानो आग लगी है, क्योंकि शीतलता प्रदान करने के लिए उसका पति वहाँ उपस्थित नहीं है। नागमती की विरह वेदना इतनी अधिक है कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसका तन सूख गया है। सूरज, चंद्रमा, समुद्र, मेघ भी उसकी विरह-अग्नि को सह नहीं पा रहे।

उपरोक्त पंक्तियाँ 'पद्मावत' के 'बारहमासा वियोग वर्णन' की महत्वपूर्ण पंक्तियाँ हैं। इसमें विभिन्न मासों में नागमती का विरह दिखाया गया है। ये पंक्तियाँ अवधी भाषा में रचित हैं।

5/2 / 1k

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

उपरोक्त पंक्तियाँ कवि तुलसीदास द्वारा कृत 'कवितावली' से ली गई हैं।

कवितावली में मुख्य रूप से कवि तुलसीदास ने सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को उठाया है।

तुलसीदास कहते हैं कि समाज में ऐसी स्थिति आ गयी है कि किसान, व्यापारी, भिखारी, नट, नौकर, चोर इत्यादि सभी व्यक्ति किसी प्रकार अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। कोई पहाड़ चढ़ रहा है तो कोई चापलूसी कर रहा है। पेट की आग इतनी अधिक है, कि ऊँच-नीच, धर्म-अधर्म ~~कुछ~~ कोई भी कुछ भी करने को तैयार है।

यहाँ तक की लोग अपने पेट की आग को शांत करने के लिए अपने बेटे-बेटियों को बेचने को भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तैयार हैं।

तुलसीदास ने कवितावली में रामराज्य की कल्पना तथा कलियुग की व्याख्या की है। उपरोक्त पंक्तियाँ कलियुग की विशेषताएँ हैं। इनके समाधान के लिए तुलसीदास 'राम-भक्ति' की शरण को ही श्रेष्ठ बताते हैं। ये पंक्तियाँ ब्रज भाषा में लिखी गई हैं।

और गहराई लाएँ

5/16

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ ~~सूरदास~~ सूरदास द्वारा रचित सूरसागर के 'भ्रमरगीत' खंड से ली गई हैं।

गोपियाँ इन पंक्तियों ~~के~~ के माध्यम से उद्धव को उलाहना देते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार बंजारे सामान लादकर घूमते हैं उसी प्रकार उद्धव भी पुराणों का ज्ञान लादकर उन्हें योग सिखाने आए हैं। वे उद्धव की बातों का खण्डन करती हुई कहती हैं कि जिस प्रकार एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, उसी प्रकार ~~प्रेम~~ प्रेम अथवा भक्ति और ज्ञान ~~का~~ अथवा योग एक साथ फलित नहीं हो सकते। वे उद्धव से पूछती हैं कि वे क्यों उनके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम पथ पर काँटे की तरह ज्ञान तथा योग को रखना चाहते हैं।

उपरोक्त पंक्तियाँ उपालम्भ काव्य के रूप में गोपियों की भाव-प्रेरित वक्रता को दर्शाती हैं। अंततः गोपियाँ इस विवाद में जीतकर सगुण की स्थापना करती हैं और उद्धव को यह मानने पर मजबूर करती हैं कि,

"गयो तहाँ निरगुन कहिवे को,
भयो सगुन को चेरो।"

ये पंक्तियाँ ब्रज भाषा में लिखी गई हैं तथा ब्रज को साहित्यिक भाषा बनाने में इनका अभूतपूर्व योगदान है।

5½/10

और है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'शृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास भक्तिकालीन कृष्ण काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। सूरदास मुख्यतः प्रेम के कवि हैं। अर्थात उनकी कविताओं में मुख्यतः प्रेम के ही विभिन्न भाव अभिव्यक्त हुए हैं। प्रेम के जिन रूपों को सूर ने अपने काव्य में सजीव किया है, वे हैं- वात्सल्य, शृंगार तथा साख्य। 'भ्रमरगीत सार' की बात करें तो इसमें मुख्य रूप से शृंगार पक्ष को शामिल किया गया है। यूँ तो सूरदास ने शृंगार के 'संयोग' तथा 'वियोग' दोनों ही पक्षों को विस्तार से चित्रित किया है, किन्तु भ्रमरगीत सार में मुख्य रूप से 'वियोग पक्ष' केन्द्रीय भूमिका में दिखता है।

'भ्रमरगीत' को उपालम्भ काव्य की भूमिका में देखा जाता है। उपालम्भ का अर्थ है उलाहना देना। हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परंपरा तो पहले भी चलती रही है जैसे 'भागवत' पर आधारित परमानंद इत्यादि की रचनाएँ किन्तु उपालम्भ का ऐसा चित्रण सूर के 'भ्रमरगीत' के स्तर कहीं नहीं दिखता। भ्रमरगीत में मुख्यतः उन प्रसंगों का वर्णन है जब कृष्ण के आग्रह करने पर उद्धव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ब्रज आते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य है गोपियों के प्रेम मार्ग के ऊपर ज्ञान मार्ग की श्रेष्ठता साबित करना। गोपियाँ, जो कि 'सगुण' कृष्ण की भक्ति एवं प्रेम में आकंठ डूबी हैं, उद्धव की हर बात को काटती हैं। किन्तु इस सबके मध्य वे यह नहीं भूलती कि उद्धव ब्रज के अतिथि हैं। अतः उनका अपमान किए बिना उनकी बातों को खण्डित करने के लिए 'भ्रमरगीत' का सहारा लेती हैं।

गोपियों की उलाहना अलग-अलग स्तरों पर है। पहले स्तर पर जब वे उद्धव के ज्ञानमार्ग की बातों को खण्डित करती हैं। जैसे, वे उद्धव पर व्यंग्य करती हैं:-

" आयो घोष बड़ो व्यापारी, ।
लादी खेप गुण ज्ञान जोग,
ब्रज में आन उतारी ॥ "

एक और संदर्भ में वे कहती हैं-

" ऊधो या लागों भली आए ।
ये बातें कहि-कहि ब्रज के लोग हंसाए ॥"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गोपियों की उलाहना उद्धव तक ही सीमित नहीं हैं। वे कृष्ण के दर्शन को लालायित हैं। ऐसे में जब उन्हें उद्धव ज्ञान की बातें सिखाते हैं, तो वे कृष्ण को उलाहना देने से भी नहीं चूकतीं। वे कहती हैं–

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आये।
जानि बड़ी बुद्धि जुवतिन को,
जोग संदेस पठाये ॥"

जब गोपियों को यह पता चलता है कि कृष्ण मथुरा में 'कुब्जा' नामक स्त्री के संपर्क में हैं, तो वे ईर्ष्या की भावना से कह उठती हैं–

"आपहुँ केलि करत कुब्जा संग,
हमहिं सिखावत जोग।"

गोपियों की उलाहना का शिकार सिर्फ उद्धव अथवा कृष्ण ही नहीं, अपितु प्रकृति भी होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोपियाँ प्रकृति से आशा करती हैं कि वह भी श्याम सुंदर की विरह-वेदना को महसूस करे -

" मधुवन तुम कत रहत हरे ।
विरह वेद स्यामसुंदर के ,
ठाढ़े क्यों ना जड़े ।"

इसी प्रकार वे 'मथुरा' नगरी को भी उलाहना देती हुई कहती हैं -

" वह मथुरा काजर की कोठरी,
जे आवहिं से कारे ।"

स्पष्ट है कि एक उपालम्भ काव्य के रूप में भ्रमरगीत जितना संश्लिष्ट है, उतनी अन्य कोई रचना नहीं।

11 1/2
20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर मूलतः भक्त थे, दार्शनिक नहीं। वे निरक्षर थे अतः उन्होंने शास्त्र-ज्ञान भी अर्जित नहीं किया था। किन्तु बहुश्रुत होने के कारण उन्होंने विभिन्न दर्शनों की सारणियों को सुना था। अतः कबीर के दर्शन पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। कबीर के दर्शन की व्याख्या ब्रह्म, जगत, आत्मा, माया इत्यादि सिद्धांतों के संदर्भ में की जा सकती है।

ब्रह्म के विषय में कबीर मूल रूप से शंकराचार्य के अद्वैतवाद से प्रभावित हैं। उन्होंने ब्रह्म का निर्गुण स्वरूप ही माना है। इस विषय में एक धारणा यह भी है कि कबीर पर इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रभाव है। किन्तु इस्लामी एकेश्वरवाद जगत को सत मानता है जबकि अद्वैतवाद जगत को मिथ्या मानता है। ब्रह्म का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कबीर कहते हैं-

"दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर अद्वैतवाद के अनुसार ही आत्मा को ब्रह्म का ही अंश से भिन्न नहीं मानते। वे इस अद्वैत को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं -

" जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर-भीतर पानी।
फूटा कुंभ, जल जलहि समाना, इहै तथ कहै ग्यानी॥"

इसी प्रकार जगत की निस्सारता समझते हुए वे संसार को 'कागद की पुड़िया' का दर्जा देते हैं, जिसे 'बूंद पड़े घुलि जाना है।'

इसके अतिरिक्त कबीर के दर्शन में एक महत्वपूर्ण पक्ष है 'माया का स्वरूप'। भारतीय दर्शनों में माया के को दो अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता है। जहाँ वैष्णव वेदांत 'माया' को ईश्वर की सर्जनात्मक शक्ति के रूप में देखता है, वहीं अद्वैतवाद के समर्थक उसे दुष्ट, दिग्भ्रमित करने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं। कबीर भी इसी 'माया रूप' के समर्थक हैं। वे कहते हैं-

" माया मुई न मन मुवा मरि मरि गया सरीर।
आसा तृस्ना ना मुई यों कहि गया कबीर॥"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शंकराचार्य के अद्वैतवाद का समर्थन करते के बाद भी कबीर के दर्शन में एक बड़ा परिवर्तन दिखता है। वे निर्गुण ब्रह्म को तो अवश्य स्वीकारते हैं, किन्तु ब्रह्म की प्राप्ति के लिए 'ज्ञान मार्ग' के बदले 'भक्ति मार्ग' प्रतिपादित करते हैं।

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय॥"

इसके साथ ही उन्होंने निर्गुण ब्रह्म को 'राम' नाम से संबोधित किया है जो उन्होंने रामानंद से लिया था। स्पष्ट है कि कबीर का दर्शन उनके व्यक्तित्व की तरह ही संश्लिष्ट है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

'भ्रमरगीत' की परंपरा यूं तो कालीदास कृत 'अभिज्ञान शाकुंतलम', से ही चली आ रही है, किन्तु भक्तिकालीन कृष्णकाव्यधारा के कवि सूरदास ने 'भ्रमरगीत' परंपरा को कुछ नए तथा अप्रतिम आयाम दिए हैं।

सूरदास की 'भ्रमरगीत' में जो मौलिक उद्भावनाएँ हैं, उनमें से एक प्रमुख पक्ष है – निर्गुण – सगुण विवाद का। इस विवाद

सूरदास का काल निर्गुण- सगुण के चरम संघर्ष का काल था। सूरदास स्वयं कृष्ण भक्त थे तथा वे चाहते थे कि आम समाज में भी भक्ति की सगुण परंपरा को स्थापित करें। निर्गुण- सगुण विवाद के दार्शनिक एवं सैद्धांतिक पक्ष इतने संश्लिष्ट थे कि उन्हें जनसुलभ बनाना आसान न था।

सूरदास ने इसके लिए एक रास्ता निकाला। 'उद्धव' को उन्होंने 'निर्गुण' तथा 'ज्ञान मार्ग' के। समर्थक बना दिया, तथा गोपियों को 'सगुण' तथा 'प्रेम मार्ग' का। गोपियों – उद्धव विवाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के द्वारा सूर ने इस वैचारिक संघर्ष को बोधगम्य बनाया।

इस प्रसंग में गोपियाँ, उद्धव के हर तर्क पर भारी पड़ती हैं। गोपियों ने उद्धव के निर्गुण ईश्वर पर सवाल उठाते हुए कहा है–

"निरगुन कौन देस को बासी।
को है जनक, जननी को कहियत,
कौन नारि को दासी॥"

पुनः जब उद्धव उन्हें प्रेम मार्ग से विमुख करने का प्रयत्न करते हैं, तो वे ~~[illegible]~~ अपने तर्क देते हुए कहती हैं –

"ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतो, सो गयो स्याम संग,
को अवराधै ईस॥"

उद्धव जो कि अत्यंत ज्ञानी हैं, निरंतर गोपियों के तर्क के सामने झुकते से प्रतीत होते हैं। गोपियाँ उन्हें भी ~~[illegible]~~ प्रेम मार्ग ~~की~~ पर चलने का आग्रह करती हैं –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" ऊधो कोकिल कूजत कानन।
तुम हमको उपदेस करत हो, भस्म लगावत आनन ॥ "

इन सब के पश्चात निर्गुण के समर्थक उद्धव अपनी पराजय स्वीकारते हुए कृष्ण से कहते हैं।

" अब अति पंगु भयो मन मेरो।
गयो तहाँ निरगुन कहिवे को,
भयो सगुन को चेरो। "

अतः यह स्पष्ट है कि भ्रमरगीत के द्वारा सूरदास ने निर्गुण पर सगुण की विजय दिखाई है।

8½/15
अच्छा है।
मॉडल उत्तर भी देख लें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर भक्ति काल के एक प्रमुख कवि हैं। कबीर के काव्य की समीक्षा में एक महत्वपूर्ण पक्ष है उनकी काव्य-भाषा। हिन्दी साहित्य-इतिहास के लेखन में कबीर की काव्य-भाषा को लेकर विभिन्न मत हैं। जहाँ एक तरफ आचार्य शुक्ल को उनकी भाषा 'परिष्कृत एवं परिमार्जित' नजर नहीं आती, वहीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहने में भी नहीं सकुचाते।

आचार्य द्विवेदी स्पष्ट कहते हैं-

"वे (कबीर) भाषा से वो सब कहलवाते हैं जो वे कहना चाहते हैं।
सीधे-सीधे तो ठीक, नहीं तो दरेरा देकर।"

आचार्य शुक्ल का कबीर की काव्य-भाषा को लेकर जो मत है, वह परंपरागत काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप है। किन्तु आचार्य द्विवेदी,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो भाषा की महत्ता उसके रसवादी होने में नहीं अपितु सामाजिक तथा मनुष्यवादी होने में देखते हैं। अतः कबीर की भाषा जो संस्कृत के तत्सम शब्दों को नहीं, अपितु लोक-जीवन में प्रचलित शब्दों को महत्व देती है, आचार्य द्विवेदी के अनुसार कबीर को 'भाषा का बादशाह' बनाती है।

भाषा के संदर्भ में स्वयं कबीर का मत भी स्पष्ट है-

"संस्किरत है कूप जल,
भाखा बहता नीर।"

कबीर की काव्य-भाषा की एक अन्य विशेषता है उसकी प्रसंगानुकूलता। उदाहरण के लिए, जब कबीर दास्य भाव से निर्गुण राम की भक्ति करते हैं तो वे कहते हैं -

"मैं तो कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।
गले राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊँ॥"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'मुतिया' नाम के संदर्भ में आचार्य द्विवेदी कहते हैं -

"मुतिया नाम है बड़ा जानदार। इस नाम से ही कुत्ते की सारी निरीहता मानो दुम हिलाते सामने खड़ी हो जाती है।"

कबीर की भाषा की बात करें, तो यह दिखता है कि कबीर ने तद्भव, देशज, फारसी शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। जैसे जब वे मुस्लिम समुदाय की कुरीतियाँ उजागर करते हैं, तो 'मुल्ला', 'खुदाय' जैसे शब्द उनकी कविताओं में दिखते हैं। कबीर की भाषा को कुछ समीक्षकों ने 'सधुक्कड़ी' अथवा 'पंचमेल खिचड़ी' भी कहा है। कारण यह है कि उनकी कविताओं में ब्रज, अवधी, पंजाबी, छत्तीसगढ़ी, फारसी सभी भाषाओं का मेल दिखता है।

जैसे → "बरस्या बादर प्रेम का भीज गया सब अंग।" पर पंजाबी भाषा का असर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर के भाषा की एक सीमा यह है कि जहाँ उन्होंने साधनात्मक रहस्यवाद को व्यक्त करने के लिए उलटबाँसी का प्रयोग किया है, वहाँ भाषा प्रतीकात्मक होने के कारण बोधगम्य नहीं रह जाती।
जैसे - ~~नदिया~~ "नैया बिच नदिया डूबती जाए।"

कुल मिलाकर कह सकते हैं कि कबीर परंपरागत भाषा का प्रयोग भले न करते हों, किन्तु आमजन को उनकी कविताएँ सुलभ हैं। और इसमें उनकी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।

11½/20

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।" इस कथन के संदर्भ में सूर के भ्रमरगीत पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीत में सूरदास ने गोपियों की भाव-प्रेरित वक्रता तथा वाग्विदग्धता के माध्यम से प्रेम में निहित अनुभूतियों को प्रभावी रूप में उद्घाटित किया है।

गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में इस हद तक डूबी हैं कि उद्धव का आना भी उन्हें कृष्ण का आना लगता है। वे कहती हैं -

" ऊधो पा लागौं भली आए।
तुम देखे जनु माधव देखे,
तुम त्रय ताप नसाए॥ "

गोपियों को पता है कि उद्धव को कृष्ण ने ही भेजा है। अतः वे अपने प्रियतम के दूत का अपमान नहीं कर सकतीं। इसलिए उद्धव के ज्ञान देने पर वे प्रतीकात्मक रूप में व्यंग्य करती हैं।

" रेख न रूप बरन न जाको,
ताको हमें बतावत। "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उद्धव के बार-बार गोपियों को प्रेममार्ग से विमुख करने के प्रयास से वे क्रोधित सी हो जाती हैं। तथा अपने प्रेम को सुरक्षित रखने के लिए कह उठती हैं -

उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसेहूँ निकसति नाहिं,
तिरछे है जु अड़े ॥"

प्रेम की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ईर्ष्या का भाव इसमें अत्यंत सामान्य माना जाता है। जब गोपियों को 'कुब्जा' के विषय में पता चलता है, तो वे आहत होकर कहती हैं -

" ऊधौ जागे माथे भाग।
कुब्जा को पटरानी कीन्हीं,
हमहिं देत बैराग ॥"

प्रेम में विरह-वेदना अत्यंत दारुण व मार्मिक हो जाती है। राधा के वर्णन में सूर का आशय यही है -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"अति मलीन वृषभानु कुमारी।
हरिस्रम जलु अंतर तनु भीजै,
ता लालच न धुवावति सारी ॥"

अतः प्रेम के विभिन्न पक्षों का विस्तृत उद्घाटन भ्रमरगीत में हुआ है।

Good 8½

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) वर्तमान जीवन-संदर्भों में तुलसी की रामराज्य परिकल्पना की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कवि तुलसीदास ने रामचरितमानस तथा कवितावली दोनों में ही कलियुग की व्याख्या तथा रामराज्य की परिकल्पना की है।
कलियुग के बारे में वे कहते हैं-

"कलि बारहिं बार दुकाल परै,
अन्न बिनु सब लोग मरै।"

वर्तमान संदर्भ में यह बात अत्यंत प्रासंगिक है। आज भी भुखमरी, अकाल की समस्याएँ दिखाई पड़ती हैं। आधुनिक कवि नागार्जुन कहते हैं-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास।"

इसी प्रकार तुलसीदास कलियुग में ~~अर्थव्य~~ आर्थिक समस्याएँ उजागर करते हुए कहते हैं-
"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन सबके पश्चात वे रामराज्य की परिकल्पना करते हुए कहते हैं कि -

" दैहिक दैविक भौतिक तापा
रामराज्य काहूँ नहिं व्यापा।"

वर्तमान संदर्भ में यह बात अति प्रासंगिक है। ~~विकास~~ विकास के पूंजीवादी मॉडल के तहत हमारे समाज में जो विकास हुआ है उसके कारण लोगों की आय के बीच अंतर अत्यधिक बढ़ गया है। इसके कारण गरीबों तथा वंचित वर्गों को दैहिक तथा भौतिक दोनो समस्याएँ उठानी पड़ती हैं।
इस संदर्भ में तुलसीदास ने जिस समतामूलक (यूटोपियन) समाज की कामना की है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

और गहराई लाएं
2½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहीं नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

उपरोक्त पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद कृत 'स्कँदगुप्त' से ली गई है।

ये पंक्तियाँ देवसेना ने स्कन्दगुप्त से कही है। प्रसाद के वैचारिक दृष्टिकोण के अनुसार जो श्रममूलक शाँति का अनुभव व्यक्ति को करना चाहिए ये पंक्तियाँ उसी संदर्भ मे कही गई है।

देवसेना के अनुसार यह जरूरी नही कि हर भावना को एक अंतिम बिन्दु तक पहुँचाया जाए। भावना को स्वयं महसूस करना भी उसकी पूर्ति ही मानी जाएगी।

4/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पँक्तियाँ यशपाल कृत 'दिव्या' से ली गई हैं।

'दिव्या' इस उपन्यास की नायिका है। उपन्यास के अंतिम दृश्य में जब उसके सामने रुद्रधीर यह प्रस्ताव रखता है कि वह नगर में संगीत की अधिष्ठात्री के स्थान पर उसकी रानी बनना स्वीकार करे तो उसके उत्तर में दिव्या ये वाक्य कहती है।

दिव्या के अनुसार नारी को सत्ता, अत्यधिक स्वतंत्रता तथा आध्यात्मिक ज्ञान इनमें से कुछ नहीं, अपितु एक पहचान चाहिए। वह पहचान जो उसे पुरुष के समकक्ष अधिकार दिलाए।

यशपाल ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से यह रचना की है।

1/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं–पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ मन्नू भंडारी कृत महाभोज से ली गई हैं।

बीसू की मौत के बाद मुख्यमंत्री दा साहब जब गाँव का दौरा करने आते हैं तब वे बीसू के पिता को अपनी गाड़ी में बिठाते हैं तथा उसे संबल देने का प्रयास करते हैं। यह दृश्य देखकर गाँववाले हीरा की किस्मत से जलने लगते हैं।

ऊपरी तौर पर यह प्रतीत होता है कि दा साहब बीसू के पिता से हमदर्दी जता रहे हैं, किन्तु दरअसल वह तो उनकी राजनीतिक चाल का एक हिस्सा मात्र है। ताकि विपक्षी दलों के नेता गाँववालों को उनके खिलाफ भड़का न सकें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इन पंक्तियों में राजनीति का घिनौना चेहरा दिखाने की कोशिश है जो कि 'महाभोज' का मुख्य प्रयोजन भी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और ...

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ मोहन राकेश कृत 'आषाढ का एक दिन' से ली गई हैं।

इस संवाद में कालीदास कश्मीर से लौटने के बाद मल्लिका से अपनी अनुभूतियों को बाँटता है। कालीदास कहता है कि उसका वास्तविक स्वभाव तो संवेदनशील ग्रामीण रचनाकार का था। उज्जैन जाकर जैसे उसका स्वधर्म उससे दूर हो गया। उसने यह अनुभव किया कि जिस वातावरण में वह रह रहा है वह उसके लिए उपयुक्त नहीं किन्तु फिर भी स्थितियों को ठीक करने की कोशिश करता रहा।

उपरोक्त पंक्तियों का भाव सिर्फ इतना है कि निर्णय यदि ~~अंतर्मन~~ अंतरात्मा के अनुसार नहीं, अपितु भौतिक परिस्थितियों के अनुरूप लिया जाए, तो विसंगतिबोध बढ़ जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ये पंक्तियाँ रचनाकार के अस्तित्ववादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करती हैं।

और गहराई लाएँ

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' से लिए ली गई है।

आचार्य शुक्ल ने इस रचना में, श्रद्धा, भक्ति के अंतरों, पारस्परिक संबंधों तथा उनके प्रतिमानों पर विस्तृत चर्चा की है। उपरोक्त पंक्तियों में आचार्य शुक्ल कहना चाहते हैं कि श्रद्धा उनके प्रति हो जो लोक-कल्याण में अपनी भूमिका निभाते हैं। ऐसे ही लोग जो समाज कल्याण के कर्म करते हैं, उन्हें अवतार कहा जाता है।

उपरोक्त पंक्तियाँ आचार्य शुक्ल द्वारा रचित पुस्तक चिंतामणि से हैं, जिसमें शुक्ल जी ने काव्य संबंधी अपनी धारणाओं को स्पष्ट किया है।

4½/10

काव्य-सौंदर्य नहीं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिये। क्या आप इस नाटक का इससे बेहतर नाम प्रस्तावित कर सकते हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक है। मोहन राकेश नवलेखन के दौर के रचनाकार है। वे मानते हैं कि सर्वश्रेष्ठ रचना वही हो सकती है जिसमें ~~कवि~~ रचनाकार का भोगा हुआ यथार्थ संप्रेषित किया गया हो। 'आषाढ़ का एक दिन' 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' का हिन्दी अनुवाद है। यह पंक्ति कालीदास कृत 'मेघदूतम' में बार-बार आई है। मोहन राकेश मानते हैं कि यह कालीदास के स्वयं की ही अनुभूति है जो मेघदूत में व्यक्त हुई है। इसी दृष्टिकोण को जनकवि नागार्जुन भी प्रतिपादित करते हुए कहते हैं -

"अमल धवल ~~गिरि~~ गिरी के शिखरों पर,
प्रियवर तुम कब तक सोए थे।
रोया यक्ष कि तुम रोए थे,
कालीदास सच-सच बतलाना।।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस नाटक में अस्तित्ववादी दृष्टिकोण दिखाया गया है। आषाढ़ के गरजते, बरसते बादल प्रायः चरित्रों की मानसिक अंतर्दशाओं को चित्रित करते हैं। सुख व मिलन के क्षण में बादल बरसते अधिक हैं, व तनाव के क्षण में गरजते अधिक हैं। यह नाटक अस्तित्ववादी होने के कारण स्थिति-प्रधान नाटक है। इस लिहाज से भी 'आषाढ़ का एक दिन' नाम उचित प्रतीत होता है।

यदि इस नाटक का नामकरण फिर से करना हो तो दो-अवस्थाएँ हो सकती हैं। चूँकि कालीदास, मल्लिका मुख्य चरित्र हैं, तो उनके आधार पर नामकरण किया जाए। किन्तु यह उचित नहीं होगा। क्योंकि इससे नाटक में छिपा लघुमानववादी दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं होगा। नाटक में घटनाएँ इतनी विरल हैं कि उनके आधार पर भी नामकरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं किया जा सकता। सत्य यही है कि 'आषाढ़ का एक दिन' ही इस नाटक का सर्वश्रेष्ठ नाम है जो ~~इसकी~~ इसके उद्देश्य के साथ न्याय करता है।

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश का पहला नाटक है। इस ऐतिहासिक से प्रतीत होने वाले नाटक के संदर्भ में इसमें इतिहास एवं कल्पना के संबंध पर काफी विचार हुआ है।

इस संदर्भ में मोहन-राकेश स्वयं कहते हैं-

"धर्मवीर भारती, जगदीश चंद्र माथुर एवं मैंने ऐतिहासिक नाटक इसलिए नहीं लिखे कि हम इतिहास की व्याख्या करना चाहते थे या, उस काल से हमें विशेष लगाव था।"

दरअसल मोहन राकेश ने अपने नाटक में इतिहास को केवल उपयोगितावादी दृष्टिकोण से सम्मिलित किया है। उनके अनुसार आज के रचनाकार के मानसिक द्वंद्व को दिखाने के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लिए कालीदास से बेहतर चरित्र उन्हें नहीं मिला।

इतिहास राकेश के नाटक में केवल एक आवरण है। कालीदास का चरित्र, उज्जयिनी, कश्मीर का उल्लेख, कालीदास का कश्मीर का शासक बनना इत्यादि संदर्भों को छोड़ दें तो राकेश के इस नाटक में अन्य चरित्र, प्रसंग इत्यादि सभी काल्पनिक ही हैं। मल्लिका, अम्बिका, विलोम, मातुल इत्यादि सभी पात्र काल्पनिक हैं।

राकेश ने अपनी रचना में इतिहास को शामिल ~~अवश~~ अवश्य किया है, किंतु किसी कल्पना के आधार पर उसकी प्रामाणिकता कम नहीं होने दी।

इस नाटक के आधार पर कहा जा सकता है कि राकेश ने इतिहास और कल्पना के समन्वय से एक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ऐसी रचना की है जो 'आज' की
तथा 'आज के लिए' बन पड़ी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या भारत-दुर्दशा को एक त्रासदी माना जा सकता है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'त्रासदी' अरस्तवी नाट्य परंपरा का एक प्रमुख विधान है। त्रासदी के प्रमुख प्रतिमान हैं - नायक-खलनायक में द्वंद्व, एवं इस द्वंद्व से कथानक का वक्र हो जाना। नायक की अतिनैतिकता से होने वाली भूल (हैमर्शिया) जो उसे पतन की ओर ले जाए एवं अंत में विरेचन-मूलक स्थिति।

भारत-दुर्दशा की बात करें तो इसका मुख्य चरित्र 'भारत' ग्रीक अरस्तवी परंपरा के नायक की तरह भद्र, साहसी, नैतिक नहीं है। नाटक के पहले अंक में ही 'भारत' अत्यंत जीर्ण अवस्था में दिखाई देता है, जो अंत तक नहीं उठता। इसी प्रकार इसमें खलनायक की भूमिका में भारत-दुर्दैव तो है, किन्तु नायक-खलनायक में द्वंद्व नहीं। कथानक एक-रेखीय है, वक्र नहीं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैमर्शिया, नियति, पतन जैसी जैसी अवस्थाएँ भी प्रायः दिखाई नही पड़ती।

केवल इसलिए कि अंत में 'नायक' का पतन स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है, 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' मानना सही नही होगा। वैसे भी 'त्रासदी' का मूल उद्देश्य 'विरेचन' पैदा करना होता है, जबकि रचनाकार भारतेन्दु का उद्देश्य नवजागरण की सोच को स्थापित करना था।

6½

Copyright – Drishti The Vision Foundation